भुवनेश्वर दत्त शर्मा 'व्याकुल'

भुवनेश्वर दत्त शर्मा 'व्याकुल' जीक जनम 17 मार्च 1908 ईस्वीञ गाँव महथाडीह जिला–गिरिडीह, तखनेक हजारीबाग में एगो ब्राह्मण परिवारे हेल रहे। इनखर बापेक नाम बलदेव उपाध्याय आर मायेक नाम शान्ति देवी रहे। बादे बिसुनगढ, में बसला । ई 17 सितम्बर 1984 ईस्वीञ दुनियाइ छोइड़ देला।

शिक्षा–पाँच कलास तइक पढ़ल बादे ई काशी चइल गेला, कोइ कह हथ कि भाइग के गेल रहथ, जे बादे ई घुरला। हिन्दी, अंग्रेजी संस्कृत कर जानकारी ठीक रहेन।

व्याकुल जी गाँधीवादी कांग्रेसी रहथ। समयेक मोताबिक आजादीक लडाइएँ उफ1925 ईस्वीञ कांग्रेस से जुटला। हजारीबागेक पहिल साँसद बाबु राम नारायण सिंह संगे रइहके कांग्रेस कर परचार–परसार आर सामाजिक काम करथ। एहे लेताइरे कांग्रेसी कार्यकर्त्ता सरस्वती सुशीला, देवी संग काम करेक मोका मिलल। एहे संगइत उनखर प्रेम में बदइल गेल आर बादे उफ बिहा में बंइध गेला। ई सरस्वती सुशीला देवी राँडी रहीक आर ई बिहार कर पहिल मुख्य मंत्री श्रीकृष्ण सिंह कर सगी भतीजी रहीक। ई नीयर अन्तर्जातीय बिहा करल रहथ ओहो एक राँडी जनी से।

साहित्यिक जोगदान

कांग्रेसेक काम करइत कर चलते ई घुइर घुइर के सभा करथ। जहाँ उफ हिन्दी आर खोरठाञ गीत गाइके लोक के रीझाव हलथ। ई कई झीक जेहलो गेल रहथ। 1930 ई0 में ई रामवृक्ष बेनीपुरी जी से जेहले भेंटाला। इनखर 'कैदी' नामेक कविता पहिल बेर छपल। बादे जानकी बल्लभ शास्त्री जीक 'बेला' पत्रिकाञ रचना छपे लागल। बादे आरो कते पत्रिकाञ रचना छपे–हिन्दी आर उर्दूञ। 'कलाम–ए–व्याकुल' नाम से एगो किताब 1939 ईस्वीञ छपावला जकर भूमिका राम नारायण सिंह लिखल रहथ। एकर दू पंक्ति हियां हे–

नौ जवा ! या तो गुलामी को मिटाकर दम लें
वर्ना अच्छा है कि बस सर को कटा कर दम लें।

ई किताबेक दाम मोटे बारो आना (75 पैसा) रहे जकरा अंग्रेजी हुकुमत जबत कइर लेले आर आरो पांडुलिपि सब हथियाइ लेल।

कृति–हिन्दी में–कलाम–ए–व्याकुल, तरान–ए–व्याकुल, सपफर का साथी, छोटानागपुर (सब कविता संग्रह)

खोरठाञ–किसानों का आर्न्तनाद (1943–44), मादल (1950–51) मादल ध्वनि मधुर ताल (1976–77), ई सब गीत संग्रह हे खोरठा में हे।

उर्दू में–हुश्नो–इश्क, फलक से (शायरी)।

हियाँ खोरठाक पटतइर देल जाइत–

जकरा लागी हम घर दर तेयागलु
धरलुँ जोगनिया के भेस
जेकरा लागी मोर हाड़–मांस सुखी गेल
से हीरे विदेसा चलि गेल?
हाय रे विधि बड़ा दुख भेल।

हिन्दु–मुसलमाने के एकता बनाय राखेक खातिर लिइखला–

''नाहि कोई अलग न आन गो
एक सबे हिन्दु–मुसलमान
राम–रहीम एक–कृष्ण–करीम एक
एक खोदा, अल्ला भगवान गो''

किसानेक दुरद सा पर उनखर पंक्ति

झुमरि बिसरि गेल्हू, बिसरलू डोहवा कि
बिसरलू माँदर के ताल गो
बसिया के जून आजु, मन हूँ न भावइ कि
भावई न गोरिया, के गाल गो, हाय राम

किसानेक काँदेक (आर्न्तनाद / क्रदन) गीत कर पंक्ति

दुखदनवा कैलक हैरान रे
फिकिरिया मारलक जान
करजा करि करि खेती कैलूँ, मरि गेल रे सब धन
बैला बेची रजवा के देलुँ, सहुवा कहे बैमान
रे पिकिरिया मारलक जान।

'छउवा दुलार' कविताक पंक्ति–

हामर बाबु, हामर सोना
हामर सुगा, पढ़े ले गेल
सुन गे अकली, सुन गे सुगिया
उफँच कलेजा आइझ भेल।

एकर में हामर बाबु, हामर सोना, हामर सुग्गा कर अभिप्राय हे बेटा–बेटी दुइयो पढ़े जाय लागला। ई एकदम आधुनिक सोंच शिक्षाक प्रति हे।

प्राकृति चित्रण परक कुछ पंक्ति जे झारखंडेक सुन्दरइ कर बखान कर हे, हियाँ साफ झलक हे–

मनोहर बोन–झार, झरना नदी–पहाड़
कोईल पपीहा करे सोर गो
डाहक सुनावे गीति, नाचे मोर गो
एहे देसें लागे मन मोर गो।

ई नीयर देखल जाय तो खोरठा आधुनिक कालेक ई पहिल कवि रहथ, भले कुछ समीक्षक इनखा आधुनिक कालेक नाञ माइन के मइधकालेक भीतरे राइखके श्रीनिवास पानुरी के पहिल कविक ठाँव दे हथ। झाजी जी, ओहदार जी, आकाश खूँटी जी ई सभीन इनखा मइध्काले राख हथ। मगुर डॉ. गजाध्र महतो प्रभाकर इनखा आधुनिक कालेक कवि माइनके 1920 ईस्वीञ से आधुनिक जुगे क सुरूआत मान हथ। भले 1980 तइक कर पहर के पानुरी जुग माइन के इनखो मोरल बादे 1989 में 'पानुरी स्मृति सम्मान' देल गेल हे खोरठा साहित्य–संस्कृति– परिषद, बोकारो बाठेले।

अइसन कवि के सम्मान मिलके चाही अनादर नाञ ई कवि के शत् शत् नमन।

भवप्रीतानन्द ओझा

शिव कर आराधक, शक्ति के उपासक, राधा –कृष्ण इहलीलाक गायक, देवघर बाबा धाम कर मठाधीश(सरदार पंडा) सदुपाध्याय भवप्रीतानन्द खोरठा साहितेक माँझा–माँझी कालेक (मध्यकालीन) कवि मानल जा हथ। इनखर जनम देवघर कर पासे कुंडा गाँव में आसीन कृष्ण पक्ष संवत् 1943 (सन् 1886 ई.)में मठाधीश शैलजानन्द कर जेठ पौत्र कर रूपे हेल रहे। इनखर आयो (पितामही/दादी) कर नाम सुमित्रा देवी, बापेक नाम त्रिपुरानन्द आर मायेक नाम नूना देवी रहे। बाप छउवे पहरे गुजइर गेल कर चलते इनखर लालन–पालन आयो कर हाथे हेल।आयो कर दुलार इनखा भरपूर मिलल, पर पारिवारिक कलह के कारन इनखर पढ़ाइ दु कलास से आगु नाञ हेवे पारल। बादे इनखर बुबाक मठाधीशी खतम हेल आर ऊ एगो मुकदर्शक बइन रइह गेला। इयानि इनखर जिनगीञ दुख भोगेक दिन सुरू हेल। आयो मोरेक पहर कहइल कि 'बेटा तोञ हामर मुंहे आइग नाञ दिहों, ई ले कि तोरा सरदार पंडा बनेक हउ।' जुवान हेला, बिहाउ हेल मगुर पारिवारिक कलह थमल नाञ, बढ़ते गेल, पफलतः गरीबी आइ गेल। पढ़ल रहथ नाञ् जे नोकरी करतला, जजमानी प्रतिष्ठाक अनुकूल नाञ बुइझ घार के दु हजार में बेइचके रामपुर में जाइके फूस कर घारे रहे लागला। हियें, गंवइया संग रइहके जिनगी बितवे लागला। घार बेचल बाद पावल कचा(रूपिया) जखन बीस रूपिया बाँचल रहे, तखने उनखर घरनी के माँय दुरगा सपनाञ कहला कि 'ई बाँचल कचल हमरा देइ दे एकरे में तोर कलियान हउ'। ई बात उनखा सुनवल गेल तो ऊ बाँचल कचा के दुरगाक पूजा–अर्चना में खरच कइर देला।

साहित्य साधना

आब गरीबीक जिनगी धीरज, आत्मबिसुवास कर संगे देहाती जिनगी जीये लागला आर आदिबासीक संगे गीत–झुमइर कइर मन बहलावे लागला। अइसे तो भक्ति परक भजन किशोरावस्था सेइ लिखो हलथ, मगुर हियाँ आदिबासीक संगे लोकभासाञ रचे लागला, जे बेसी लोकप्रिय हेल आर ओकरे से उनखा सम्मानो मिले लागल।

सदुपाध्याय जी पहिले बंगला से प्रभावित हेल रहथ। इनखर पसंद कर कवि रहथ 'माइकल मधुसुदन' जकर से बंगला में गीत भजन करो हलथ, मगुरबादे ऊ देवघरिया लोकभासा में रचे सुरू करलाआर एकरे से ख्याति बेसी मिलल।

इनखर गीत भजन से प्रभावित हेइके लक्ष्मीपुर कर राजा प्रताप नारायण देव पफागा गांवे साढ़े सैतीस बीघा जमीन ब्रह्मोतर रूपे भेंट करल रहथ, जकरा ऊ कृतज्ञतापूर्वक भोग करे लागला। काशीपुर पंचकोट कर राजाउ इनखा ढेइर सम्मान देला, ऊ देवघर में रहे खातिर एगो मकान (घार) कीन देला आर सरदार पंडा बनवे में मदइतो करला। जामताड़ा कर राजाउ इनखा सम्मान देल रहथ। कोट कर निर्णयानुसार साढ़े एकतालिस बछरेक उमइरे 1929 ई. कर जेठ महीनाञ इनखा सरदार पंडा (मठाधीश) कर कुरसी मिलल। जकरा ई आगु भोग करला। इनखर निधन 1970 ई. में हेल हे।

कृति–इनखर रचना बंगला लिपि आर देवनागरी लिपि में संकलित हे। देवनागरी लिपि में 'भवप्रीतानन्द पदावली' आर 'बैद्यनाथ क्षेत्र सर्वस्व' बेसी मसहूर हे। 'झुमर रस मंजरी', 'झुमर रस तरंगिनी', आर 'झुमर पारिजात'बंगला लिपि में हे।

इनखर गीत–भजन झुमइर तरजे लिखाइल हे, जकर में भक्ति परक गीत में सगुन कर संगे संग निरगुनो कर गीत हे। पटतइर रूपे कुछ गीत हियाँ देल जाइ रहल हे–

शिव स्तुति

जय जयति हर हर, करूणा सागर
चन्द्रधर, परमेश्वर ।।
अर्धनारीश्वर, करी चर्माश्वर
त्रिनेत्र त्रिगुण गुणाकर
तारहु ''पामर भवप्रीता नर''

शिव कर स्वरूप बरनन

'देखु जोगिया के रंग,देखु जोगिया के रंग
तपसी के भेषधरी, नारी अरधंग
विहसित पंचमुख, आनन्द उमंग
कपारे अगिनि जटा गंग–तरंग।
भांगे आंखि ढुलू –ढुलू,भाँगे आँखि ढुलू–ढुलू
जटा बीच बोहे गंगा कुलू– कुलू
ईश्वर शिवसुन्दर, हेम गौर कलेवर
देहा पर संपा छुलू– मुलू

निर्गुण परक एगो गीत–

धन जन परिवार, क्षण में सभे उजार
दारूण संसार/छीरे, दारूण संसार
तोरा से उचटै जी हमार रे, दारूण संसार
प्राणी सभे काल के आहार रे ,दारूण संसार ,
माटी लागी काटा–काटी,नारी लागी लाठा–लाठी, रे दारूण संसार
पेट लागी कतै पापाचार रे, दारूण संसार ।

एगो दुसर निर्गुण भावेक गीत

माया के संसार, यहां सदा कोयने रहनहार, मसया के संसार
ने रहला राम–श्याम, ने अर्जुन, ने बलराम,
भीष्म द्रोण कर्णक ने उबार।
गाछ बिरीछ पशु पाखी,जे सब देखल जाय आँखी
सेहो सभे काल के आहार ।।

'नारी' उपर एगो गीत

मोहले भूवन दस चारी रे नारी/ तोर बलिहारी
मोहनी के रूपें मात् बौरावला भोलानाथ
नारी तोर बलिहारी

गोपी प्रेमे जनमे मुरारी रे नारी/तोर बलिहारी।
विधता के मृगाकार, इन्द्र के आँखि हजार/नारी तोर बलिहारी।
कते मुनि कर तप नाश, कते शूरवीर दास/नारी तार बलिहारी।

काशी धाम महात्म्य पर एगो गीत

'जेकरो कह ने गति, बाराणसी तेकर गति
जगत में धन्य काशी धाम
जहां बाबा विश्वनाथ, बसे अन्नपूर्णा साथ
जीवक दियेल अनन्त विश्राम ।।'

राष्ट्रीय भाव परक गीत

कवि चाहे भक्ति भावेक हे चाहे श्रृंगारिक, सब कर मने देशप्रेम जरूर रहहे, एहे ले सदुपाध्याय जी करो मने हे देशप्रेम कर भाव। देशप्रेम परक गीत।

देश कर आजादी पहर लिखल गीत हे–
तोरा में विदेशी रवि अस्त हे 15 अगस्त
तोरा में विदेशी रवि अस्त ।
ऋषि जुग ग्रह चाँद, इसवी सालक प्रमाण ,
बहे साले पराधीन ध्वस्त, हे 15 अगस्त।
गाँधी जीक तप पूर्ण, दासत्व निगड़ चूर्ण,
स्वाधीन जे भारत समस्त, हे 15 अगस्त।।

1962 में जखन चीनी आकरमन हेल रहे, तखन इनखर मने उठल भाव, ई गीत हे रूपे–

सीमा छाड़ी भाग दुरा चार,तेजे अहंकार
सीमा छोड़ी भाग दुराचार।।,
देख चीनियांक भरी आँख
मरे घड़ी खोंटाक पाँख।
वीर भूमि भारत पर प्रहार।
पहले कहे भाय भाय, गोली मारे धंय धंय
पापी के कपट व्यवहार ।।

हास्य विनोद परक दुगो गीत

लपफंदर महात्म्य

भैया लपफन्दर! तोहें बिनु नंगर के बंदर
तोरा डरे कांपे पुरन्दर
तों पानी में तैरावे पत्थर
केरोसिन के कहे अत्तर
पंडित के बभाव मोचन्दर ।।
तोंदिन के बतावे राति, राति के जे दिनक ख्याति
मृग (कस्तुरी मृग) के बनावे छुछुन्दर।

आलु चप पाला

महिमा तोर के कहे अलप, हे आलू चप!
महिमा तोर कहे अलप ।
राखलें देवघरक परमपत, हे आलू के चप!
तेरह सौ तेहतर साल, आलू चप करे कमाल,
देवघरें सभिक मुंहे तोरे, गप्, हे आलू के चप!

कवि सदुपाध्याय जी कर झुमइर गीतेक मुइख पात्र रहथ राधा–कृष्ण, एकर में कोइ कोइ बिद्यापतिक प्रभाव मानो हथ, तो कोइ उनखर निजी भाव। भवप्रीतानन्द पदावलीक भूमिका में लिखल गेल हे कि कवि जी आपने एक झीक राधा–कृष्ण के सपनाञ देखल रहथ आर कृष्ण जी राधा के कहल रहथ कि तोञ एकरा आपन पूत समझ, तब से कवि जी आपन के राधाक पूत बुझों हलथ।

कवि जी कृष्ण कर जनम से गोकुल में पले बढ़ेक, राध गोपी संग खेल करेक, रास रचवेक आर पिफर मथुरा आइके कंश के मारेक तक कर पूरा बरनन हे,शृंगार रस में संजोग आर बियोग कर पूरा चित्रा राखल गेल हे। एखागो पटतइर देखा –

गेलों गगरिया ले जमुना किनरिया –2
छेला बंसिया बजावे कदम के तरे
बंसिया बजावे कि हंसिया देखावै,
मोह हिया जे डोलावें, नयना बाणे।
बिनती रिझावे कि पीरित बुझावे निकुंज बने
सांझे मिले ले बोलावै, निकुंज बने।
बियोग सिंगार भाव परक एगो गीत–
भादव अंधरि भयंकर, राति लागे डर
बदरा गरजै घोर मोरा बोले कठोर,
सूप घारे झरे जलधर/राति लागे डर ।।
निकुंजे नाही! नागर मदने हानत शर
दंगले बिरह बिषधर/राति लागे डर ।।

इनखर एगो गीत 'एक टोकी फूल' में छपल हे,जकर जोगाड़ी रहथ श्रीनिवास पानुरी जी रहथ। ई गीत सूरदास कर भ्रमर गीत से मेल खा हे। गोपी सभे भँउरा से कइह रहल हथ–

कहाँ से अइले भँउरा,कहाँ रहले राइत रे!
अरे भंउरा निसी, कहाँ भेलउ परभात रे!
भोरे रलउ मधु, रोदे जरउ गात रे!
अरे भँउरा, मने रहलउ मनेक बात रे!
एके तो फूटलो हामें, छोड़ेके साथ रे!
अरे भँउरा, दोसरे, निठुर तोर जाइत रे!
भवप्रीता नन्द कहे भँउरा, जामिनी जे पात रे!
अरे भँउरा,के जोरे, प्रीत तोर साथ रे!

इनखर गेय पद में शिव, शक्ति (दुर्गा), गणेश, सरस्वती, कर स्तुतिक कृष्ण आर राधा कर प्रेम लीलाक बिशद बरनन हे। एकर में प्राकृतिक चित्रण भी भरपूर हे। कुंडा आर रामपुर में रहइत हुवांक बोन–झार, पहार, नदी, नाला, बोनेक जीव–जंतु कर पूरा बरनन पावा हे।

सदुपाध्यायजीक काइब प्रतिभाक प्रशंसा राजाक संगे – संग बंगला आर मैथिल बिदुवान सभे खूब करल हथ। मैथिल बिदुवान सभे तो विद्यापति के समतुल राखल हथ। नागपुरी कर विदुवान बी.पी. केशरी जी भी आपन किताबें ठाँव देइके नागपुरीक कवि मानेक परिआस करल हथ। मगुर इनखर गीत कर भासा देखल से साफा बुझा हे कि इनखर भासा देवघरिया खोरठा हे। कवि जी सचमुच आपन पहरेक संथाल परगनाक जनकवि (लोककवि) रहथ।